आर. एन. आई. नं. : RJHIN16694

पोस्टल रजि. नं.

पशु पालन नए आयाम

परिकल्पना एवं निर्देशन – प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

वर्ष : 2 अंक : 2 बीकानेर, अक्टूबर, 2014 मूल्य : ₹ 2.00

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

कुलपति की कलम से...

दूध का उत्पादन बढ़ाने की कवायद समय की मांग

दूध का उत्पादन करने में हमारा राज्य पूरे देश में दूसरे स्थान पर है। उत्तर प्रदेश हमसे आगे है। राज्य में औसतन पौने चार किलोग्राम दूध प्रतिदिन प्राप्त होता है। राज्य पशुधन संपदा में संपन्न हैं, लेकिन उसके अनुसार दुग्ध उत्पादन करने में पीछे हैं। 54 लाख से भी अधिक गाय–भैंसों से 87 लाख टन से भी अधिक दूध का वार्षिक उत्पादन मिल रहा है। इसमें भैंसों से 52 लाख टन दूध शामिल है। इसके साथ–साथ 1 करोड़ भेड़ों, 1.60 करोड़ बकरियों और करीब 5 लाख ऊंटों से भी दूध उत्पादन बढ़ाए जाने की विपुल संभावनाएं मौजूद हैं। सवाल है कि, हम पशु संपदा से दूध का पूरा दोहन कैसे करें! यदि राज्य के किसान और पशुपालक थोड़ी सी समझदारी का परिचय दें तो ऐसा करना बहुत आसान है। पशुओं को समुचित आहार व पोषण का प्रबंधन और वैज्ञानिक रख–रखाव करके ही दूध उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। पशुधन संपदा की सही देखभाल और उसका दोहन हमारी खुशहाली का मूल मंत्र है। वेटरनरी विश्वविद्यालय इस कार्य को अंजाम तक पहुंचाने के लिए आपके साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने को तैयार है। इस बार मानसूनी बरसात के कारण प्रचुर मात्रा में हरा चारा उपलब्ध है, जिसे साल भर सहेज कर रखने के लिए वेटरनरी विश्वविद्यालय ने रिलायंस इण्डस्ट्रीज के साथ मिलकर प्रोपाइलिन बैग में हरे चारे को साइलेज रूप मे संग्रहित करने के उपाय किए हैं। अलग–अलग साइज के साइलेज बैग में हरा चारा महीनों तक सुरक्षित और संरक्षित रखा जा सकता है। सूखे चारे की पौष्टिकता बढ़ाने के लिए यूरिया मोलासेस घोल से उपचारित करें। हरा चारा नहीं मिलने पर एक क्विंटल सूखे चारे में दस ग्राम विटामिन मिश्रण मिलाकर देना चाहिए। संतुलित आहार के साथ 1 प्रतिशत नमक एवं 2 प्रतिशत खनिज लवण अवश्य खिलाएं । इस आहार में एक हिस्सा दलिया, चापड़, खल व चूरी का होना चाहिए। पशुओं के लिए पौष्टिक आहार, स्वच्छ पानी और आवास सुविधा उपलब्ध करवाने से ही अच्छे उत्पादन की उम्मीद की जा सकती है। पशुओं में बांझपन, गर्भधारण में कठिनाईयां और अन्य व्याधियों के समुचित उपचार के लिए विश्वविद्यालय की विशेषज्ञ चिकित्सा सेवाएं और पशुधन चारा संसाधन प्रबंधन एवं तकनीक केन्द्र आपकी हर मुश्किल को आसान करने के लिए तैयार है। हम सबके मिले–जुले प्रयासों से ही राज्य में स्वस्थ और समृद्ध पशुधन की अवधारणा को मूर्त रूप देकर अधिक उत्पादन के उद्देश्य को प्राप्त किया जा सकता है।

(प्रो. ए. के. गहलोत)

श्रीमती वसुन्धरा राजे

वसुन्धरा राजे

मुख्यमंत्री राजस्थान

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर, राज्य के पशुपालकों, कृषकों और पशु प्रेमियों के लिए मासिक पत्रिका ''पशुपालन नये आयाम'' का प्रकाशन कर रहा है और इसके एक वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है।

राज्य में कृषि के बाद पशुपालन दूसरा महत्त्वपूर्ण व्यवसाय है। राजस्थान की अर्थव्यवस्था में पशुपालकों का सराहनीय योगदान है। दूर, छितराये और कम आबादी वाले गांवों और ढ़ाणियों की बहुतायत होने के कारण प्रदेश के पशुपालकों को शिक्षित और जागृत करने का कार्य कठिन प्रतीत होता है किन्तु विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालन और पशुओं के कुशल प्रबंधन के सम्बन्ध में उपयोगी जानकारी सुलभ करवाने से पशुपालकों को शिक्षित और जागरूक बनाया जा सकेगा।

आवश्यकता इस बात की है कि इस पत्रिका को सुदूर इलाकों तक प्रेषित किया जाए जिससे पशुपालक सही मायने में इससे लाभान्वित हो सकें।

मैं, पत्रिकाके वार्षिक अंक के सफल प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ।

(वसुन्धरा राजे)

।। पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारम् ।।

ARJUN RAM MEGHWAL
I.A.S. (V-Rtd.)
Member of Parliament (LOK SABHA)
Bikaner, Rajasthan

Delhi Resi. :
15, North Avenue, New Delhi-110001
Phone : 011-23093866,
Telefex : 011-23093865

Parmanent Resi. :
"Sansad Sewa Kendra",
C-66, K.K. Colony, Joiya Market,
Bikaner (Rajasthan)
Mobile : 09414075910, Telefex : 0151-2230260
E-mail:arjunrammeghwal@gmail.com
ar.meghwal@sansad.nic.in,
Website : www.arjunrammeghwal.com

संदेश

राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान विश्वविद्यालय द्वारा प्रसार शिक्षा के तहत् राज्य के पशुपालक–कृषक और पशु प्रेमियों के हित में प्रतिमाह प्रकाशित किये जा रहे ''पशुपालन नए आयाम'' के एक वर्ष पूर्ण होने के लिए आपको बधाई। इस प्रकाशन से पशुपालन को बहुआयामी बनाने, पशुचिकित्सा और पशुपालन में नवाचारों, अनुसंधान/शोध कार्यों और नवीन तकनीकी जानकारी दूरस्थ बैठे पशुपालकों और कृषकों तक पहुँचाने हेतु प्रयास किया जा रहा है। पशुपालन को एक लाभदायी व्यवसाय बनाने और कुशल प्रबंधन जैसे विषय का भी समावेश किया जा रहा है, जो एक सराहनीय कार्य है।

शुभकामनाओं सहित।

(अर्जुन राम मेघवाल)

Ajay Singh,IAS
Director

GOVERNMENT OF RAJASTHAN
Director of Fisheries

Pashu Dhan Bhawan
Tonk Road, Jaipur-302015
Tel. : +91-141-2742548 / 2745976
Direct Line : +91-141-2745975
E-Mail : dffishraj@rediffmail.com

संदेश

राजस्थान वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर द्वारा पहल करते हुए ''पशुपालन नए आयाम'' के प्रकाशन के माध्यम से पशु पालकों और कृषक समुदाय को सरल हिन्दी भाषा में पशुपालन क्षेत्र में नवीन तकनीक, रीती–नितिगत फैसलों, पशु कल्याणकारी कार्यक्रकों और पशुपालकों के दीर्घकालीन अनुभवों की जानकारी सुलभ कराई जा रही है, जो कि पशुपालकों के लिए बहुत उपयोगी है। क्योंकि कृषि के साथ–साथ पशुपालन व्यवसाय भी एक पूरक एवं स्वतंत्र दोनों तरह से कृषकों के लिए उपयोगी व्यवसाय है तथा आर्थिक विकास में पशुपालन का भी महत्त्वपूर्ण योगदान है। अतः प्रकाशित सामग्री पशुपालकों एवं कृषकों के लिए बहुत महत्त्व रखती है।

''पशुपालन नए आयाम'' के सफलता पूर्वक प्रकाशन को एक वर्ष पूरा करने पर राजस्थान वेटरनरी विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत को बधाई देते हुए शुभकामना प्रेषित करता हूँ एवं '' पशुपालन नए आयाम'' के निरन्तर उज्ज्वल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

(अजय सिंह)

प्रीतम सिंह
आई.ए.एस.

MANAGING DIRECTOR
RAJASTHAN CO-OPERATIVE
DAIRY FEDERATION LIMITED
प्रबन्धक संचालक
राजस्थान सहकारी डेयरी फैडरेशन लि.

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता है कि राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर द्वारा प्रसार शिक्षा के तहत ''पशुपालन नए आयाम'' अपने प्रकाशन की एक वर्षीय अवधि में पशुपालन को बहुआयामी बनाने, पशुचिकित्सा और पशुपालन में नवाचारों, अनुसंधान/शोध कार्यों और नवीन तकनीकी जानकारी दूरस्थ बैठे पशुपालकों और कृषकों तक पहुंचाने में सफल रहा है। पशुपालन व्यवसाय से संबंधित विविध सारगर्भित जानकारी सरल शब्दों में पशुपालक–कृषक एवं पशु प्रेमियों को उपलब्ध होने से राज्यभर में सहकारी क्षेत्र के अधीन राजस्थान को–ऑपरेटिव डेयरी फैडरेशन से सम्बद्व 21 जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघों में गठित लगभग 12 हजार 900 से अधिक दुग्ध उत्पादक सहकारी समितियों के 7 लाख से अधिक दुग्ध उत्पादक सदस्य (जिनमें 2 लाख 45 हजार से अधिक महिला दुग्ध उत्पादक सदस्य भी सम्मिलित हैं) लाभान्वित हो सकेंगे।

राज्य के दूरस्थ ग्रामों में पशुपालन व्यवसाय से सम्बद्ध अधिकाधिक पशुपालकों एवं दुग्ध उत्पादकों तक जानकारियां उपलब्ध करा ''पशुपालन नए आयाम'' पशुओं के दुग्ध उत्पादन वृद्धि एवं पशुपालन व्यवसाय के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र की बड़ी जनसंख्या को स्वरोजगार के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

मैं ''पशुपालन नए आयाम'' के एक वर्ष पूर्ण होने पर प्रकाशन से सम्बद्ध समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ एवं प्रकाशन के अपने निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति में सफल सिद्ध होने की कामना करता हूँ।

(प्रीतम सिंह)

राजेश मान
निदेशक

निदेशक
पशुपालन विभाग
राजस्थान, जयपुर

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है, कि राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय बीकानेर द्वारा प्रत्येक माह प्रकाशित किये जाने वाले समाचार पत्र ''पशुपालन नए आयाम'' ने एक वर्ष का सफर तय किया है।

पशुचिकित्सा और पशुपालन में नवाचारों, अनुसंधान/शोध कार्यों एवं नवीनतम तकनीकी जानकारियों का प्रकाशन कर प्रत्येक माह किसानों व पशुपालकों तक पहुँचाने के लिए ''पशुपालन नए आयाम'' पत्र का सराहनीय योगदान रहा है। प्रदेश के दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में इस मासिक समाचार पत्र ने जो लोकप्रियता अर्जित की है, उसके लिए आप साधुवाद के पात्र है। अपनी एक वर्ष की यात्रा में पशुधन विकास से जुड़े विविध विषयों व तकनीक आधारित इस समाचार पत्र ने किसानों, पशुपालकों को सही व सटीक जानकारी समय पर पहुँचायी है, जिससे पाठकों में विश्वसनीयता तेजी से कायम हुयी है।

वैश्वीकरण के युग में आज जहाँ ज्ञान का विस्तार तेजी से हो रहा है वहीं जनसाधारण में भी ज्ञान अर्जन की जिज्ञासा पैदा होने लगी है। वर्तमान परिस्थितियों में चुनौतियों का सामना करने के लिए निरन्तर नई तकनीकों के विकास का जितना महत्त्व हैं, उससे भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण है कि उपलब्ध नवीन तकनीकी का प्रसार किसानों तक त्वरित गति से हो सके।

हमारे वैज्ञानिक अनेकों चुनौतियों का सामना कर कई ऐसे नवाचार और शोध लेकर आये है, जो अपने आप में मील का पत्थर सिद्ध हो रहे हैं। ऐसे सभी प्रयासों को आमजन तक पहुँचाने के लिए ''पशुपालन नए आयाम'' समाचार पत्र की टीम को हार्दिक बधाई।

मेरा विश्वास है कि राजस्थान में पशुपालन को बढ़ावा देने में यह समाचार पत्र निश्चय पशुपालन को नव आयाम देगा।

प्रकाशन की सफलता के लिए मेरी ओर से

व्यक्तिशः हार्दिक शुभकामनाएँ।

(राजेश मान)

अपने विश्वविद्यालय को जानें

बीकानेर के वेटरनरी कॉलेज में 1983 से पशु रोग निदान विभाग अस्तित्व में आया। अब वेटरनरी विश्वविद्यालय में पशु विज्ञान के आधारभूत सिद्धांत और रोगों के उपचार के बीच की एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में यह विभाग कार्य कर रहा है। विभाग रोगों के निदान विषय में उच्च स्तरीय अध्ययन–अध्यापन, निदान के उपाय और पशु रोग नियंत्रण का कार्य कर रहा है। यहां पालतु पशुओं, वन्य प्राणियों और पोल्ट्री में जीवाणु, विषाणु, परजीवियों और अन्य प्रकार के संक्रमण से होने वाले रोगों के निदान में अत्याधुनिक तकनीक और उपकरणों से नियंत्रित करने का कार्य किया जाता है। केन्द्र–राज्य सरकार के संस्थानों/पशुपालन विभाग, उष्ट्र और अश्व के राष्ट्रीय अनुसंधान केन्द्रों, सीमा सुरक्षा बल सहित पालतु पशुपालकों को पशुरोग निदान की सेवांए दी जाती है। विभाग में ''हिस्टो पैथोलॉजी'' की एक मात्र प्रयोगशाला है जहां उन्नत वैज्ञानिक तकनीक की मदद से रोगों का सही और त्वरित निदान किया जा सकता है। राष्ट्रीय कृषि विकास योजना में ऊंटों में होने वाली व्याधियों के निदान के लिए 2012–13 से तीन वर्ष की एक अनुसंधान परियोजना पर कार्य किया जा रहा है। हिस्टोपैथोलॉजी और हिस्टो केमेस्ट्री के सही रोग निदान के लिए स्वचलित ऊतक प्रोसेशर्स, स्टेनर जैसे उपकरण स्थापित हैं। कैंसर की त्वरित स्थिति को क्रायोस्टेट से पता लगाया जा सकता है। विभाग में विभिन्न ऊतकों का एक म्यूजियम अध्ययन के लिए बना हुआ है। विभाग द्वारा अब तक 8 वाचस्पति और 48 स्नातकोत्तर स्तर की उपाधियों का अध्ययन करवाया गया है। वर्ष 2013 में अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय स्तर की एक–एक सेमीनार का आयोजन भी विभाग ने करवाया है।

पशुओं में आमाशय के रोग व उनका उपचार

छूत वाले रोग आमतौर पर बैक्टीरिया, वाइरस तथा अनेक परजीवियों द्वारा होते हैं। इनसे रोग बहुत ही तीव्रता से फैलता है। रोगी पशुओं से व छूत वाले रोग स्वस्थ पशुओं में खाने–पीने की चीजों जैसे–हवा, नाक, थूक, गोबर, पेशाब, सेवा करने वाले मनुष्यों तथा अन्य चीजों द्वारा आते हैं। इन रोगों से पशुधन की बड़ी हानि होती है। कभी–कभी साधारण रोग में लापरवाही करने से पशुधन संकट में पड़ जाता है।

पशुओं में आमाशय एवं आंतड़ियों के प्रमुख रोग–

आफरा, रूमेन का संक्रमण, अजीर्ण आदि।

आफरा – इस रोग में पशु का रूमेन गैसों के भरने से फूल जाता है। ये गैसें पशु द्वारा ग्रहण किये भोजन के खमीरीकरण (किण्वन) से उत्पन्न होती हैं। रूमेन में गैसें भरने से यह आकार में बढ़ जाता है। यदि पेट के बांई और उंगली से चोट करें तो यह ढोल के समान आवाज करता है। आफरा भारत में वर्षा के समय होता है। इस समय चारागाह तथा खेतों में चारा भीगा मिलता है,हरा भी अधिक होता है।

कारण – पशु के भोजन में परिवर्तन होने के कारण यानि जब पशुओं को अधिक खमीरीकरण करने वाले हरे चारे, जैसे– दलहन वाले चारे दिए जाते हैं तो ये गैसें उत्पन्न करते हैं। चारे की जो फसल ओस, वर्षा आदि से भीग जाती है वह हानिकारक होती है अधिकतर आफरा उन पशुओं में होता है जो सुबह जल्दी चरने के लिए चारागृह में जाते हैं। भूखे पशु को जब अचानक चरने को अधिक मात्रा में अनाज मिल जाता है अथवा खलिहान में अधिक अनाज खा लेते हैं तो वो रूमेन को फुलाता है। जब पशु को घर में बचा पका खाना जैसे– दाल, साग–रोटी अधिक मात्रा में मिलते हैं एवं चारा बिल्कुल नही खाता है, तो भी आफरा होता है। भोजन की पूर्ण रूप से पाचन क्रिया नहीं हो पाती जिससे खमीरीकरण द्वारा गैसें पैदा होती हैं। ग्रास नली में किसी चीज के रूक जाने से या जुगाली करने में आपत्ति होने के कारण या कभी कभी पेट में बालों की गेंद एवं पशु को अधिक समय तक सूखा या खराब किस्म का चारा देते रहने के बाद अचानक ही हरा चारा देने पर पेट फूल जाता है एवं आफरा हो जाता है।

इस रोग के होने पर पशु को सांस लेने में कठिनाई होती है। पशु खाना बिल्कुल छोड़ देता है, पैर–पटकता है। पिछले पैरों को अपने पेट–पर मारता है। गर्दन बार–बार मोड़ता है। पशु बार–बार उठता–बैठता है। जब गैस अधिक भरी होती है तो पशु को सांस लेना और भी कठिन हो जाता है। इस परेशानी में पशु मुंह से सांस लेता है। जब पशु की ग्रास नली में कोई चीज अटकी होती है तो लार बहुत गिरती है। पशु कराहता है, आंखें बाहर की ओर उभर आती हैं और लाल पड़ जाती है। यदि पेट की हवा न निकाली जाये तो रूमेन तथा मध्यपट फटने से कुछ ही घण्टों में वह मर जाता है।

उपचार– रोग की चिकित्सा में यह आवश्यक है कि गैस को रूमेन से बाहर निकाला जाये। इसको निकालने के लिए रूमेन में छेद करना पड़ता है। पेट या रूमेन की हवा–निकालने के निए ट्रोकार और कैनुला को पेट के उपर लगाते हैं। इसके बाद ट्रोकार को निकाल लेते हैं। पेट में कैनुला के रास्ते से गैस बाहर–निकल जाती है। यदि ग्रास नली में कोई चीज रूक रही है तो प्रोबेंग के द्वारा रूमेन में धकेल दिया जाता है। कैनुला के रास्ते गैस निकल जाने पर यदि पेट सिकुड़ जाता है तो फोर्मलीन नामक दवा दी जाती है। दस्त लाने के लिए हल्का जुलाब देना चाहिए। एब्लीनॉक्स द्रव की 15 बूँदें 150 मि.ली. पानी में मिलाकर औसत भार के पशु को पिलाना चाहिए। रूमेनोटोन या ऐनोरेक्सान की गोलियां खिलाना/खुराक 2–3 गोलियां प्रति

शेष पेज 4 पर...

पशुओं में थाइलेरिया रोग पहचान एवं प्रबंधन

यह रोग संकर नस्ल की सभी उम्र के बछड़े, बछड़ियों व गायों में मुख्यरूप से होता है। यह रोग किसी भी पशु प्रजाति को प्रभावित कर सकता है। यह रोग छोटे पशुओं में ज्यादा घातक होता है जिसमें दो से चार दिनों में पशु की मृत्यु हो जाती है। यह रोग मुख्यतया गर्मी तथा बरसात के मौसम में ज्यादा फैलता है क्योंकि इस रोग को फैलाने वाले चींचड़ इस मौसम में ज्यादा क्रियाशील होते हैं। इस रोग के शुरूआत में पशु को तेज बुखार, स्थानीय ऊपरी लसीका ग्रंथियों में सूजन, श्वसन तथा हृदय दर का बढ़ना, भूख की कमी, बैचेनी, आंखों में तनाव के साथ आंसुओं का बहना, श्वांस लेने में तकलीफ होना, खांसना तथा नाक का बहना आदि प्रमुख लक्षण हैं। धीरे–धीरे पशु में खून की कमी हो जाती है व किसी पशु में पीलिया भी हो जाता है। कभी–कभी पशु इधर–उधर भागता है एवं दीवार इत्यादि से टकराता है। धीरे–धीरे पशु में कमजोरी तथा अंत में मृत्यु हो जाती है।

प्रबंधनः–

1. इस रोग की पहचान रोगी पशु के लक्षण, मौसम तथा बाड़े में चींचड़ों की उपस्थिति के आधार पर की जा सकती है।
2. प्रयोगशाला में खून तथा लसीका द्रव्य की जांच द्वारा इस रोग की उपस्थिति का पता आसानी से लगाया जा सकता है।
3. चींचड़ों की जनसंख्या को नियंत्रित करना भी इस बीमारी को रोकने में एक महत्वपूर्ण कदम है।
4. इस रोग से बचाव के लिए टीका भी उपलब्ध है जो पशुचिकित्सक की निगरानी में रोग होने से पहले प्रयोग में लिया जा सकता है।
5. इस रोग के उपचार के लिए बाजार में कारगर दवा उपलब्ध है। अतः पशु के बीमार होने पर निकटतम पशुचिकित्सक से तुरंत सम्पर्क करें तथा उचित मार्गदर्शन में अपने पशुओं की देखभाल करें।

– प्रो. (डॉ.) ए. के. कटारिया, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

पेज शेष 3 का...

पशु प्रतिदिन देनी चाहिए। डाइजेस्टान, हिमालयन बत्तीसा अथवा टिम्पलेक्स की 40 ग्राम मात्रा दिन में दो बार खिलाने से पशु को दोबारा आफरा का रोग नहीं होता है।

बचाव – पशुओं के खाद्य चारे में अचानक परिवर्तन नहीं करना चाहिए। पहले थोड़ा–थोड़ा हरा चारा देना चाहिए और बाद में इसकी मात्रा बढ़ाते रहना चाहिए। वर्षा–ऋतु में ओस या पानी का भीगा हुआ चारा नहीं देना चाहिए। मौसम से खराब हुआ अथवा जला हुआ चारा नहीं देना चाहिए। अनाज सदैव दलकर और पानी में भिगोकर देना चाहिए। पशुओं को बाल चाटने से रोकना चाहिए।

.रूमेन में इन्फेक्शन होना– यह पशुओं की पेट सम्बन्धी प्रमुख बीमारी है। पेट में चारे का रूक जाना उस दशा को कहते हैं जिससे कि वह ऐसी चीजों से भर जाये जो कि पूर्ण रूप से न पचती हों। यह पशुओं में पाई जाती है जिनको खराब चारा खिलाया जाता है। ऐसा चारा न तो शरीर को आवश्यक तत्व देता है और न आसानी से पचता है। इस रोग में रूमेन की त्वचा कमजोर होकर अपना कार्य करना बन्द कर देती है।

कारण – इसका प्रमुख कारण दोष पूर्ण भोजन होता है। पशुओं के चारे में अचानक परिवर्तन होता है अर्थात खराब चारे के स्थान पर जब अच्छा चारा खाने को मिलता है तो यह अवस्था उत्पन्न हो जाती है। यदि पशु की पानी की आवश्यकता पूरी नहीं होती है और चारा खाने के एकदम बाद पानी पीने से यह अवस्था हो जाती है। बीमारी से स्वस्थ हुए निर्बल पशुओं की पाचन प्रणाली कमजोर हो जाने के कारण भी यह रोग होता है। इस रोग में पशु जुगाली न करके खाना–पीना बन्द कर देता है। पेट फूल जाता है। बांई कोख–भर जाती है और फूलकर उठ जाती है तथा नीचे झुक जाती है। यदि इस फुलाव को दबाया जाये जो यह कठोर मालूम पड़ता है। थपथपाने पर आवाज नहीं होती व पशु का दुग्ध उत्पादन घट जाता है। पशु सुस्त होकर अपने शरीर को सिकोड़ता है और पिछला पैर पटकता है। गर्दन इधर–उधर करता है। दांत पीसते तथा कड़कड़ाते हुए दस्त अनुभव करता है। गोबर बहुत कम अथवा बिल्कुल नहीं निकलता । सांस तेजी से निकलती है। पशु बराबर डकारता है। उभरे हिस्से को दबाने पर गड्ढ़ा पड़ जाता है।

उपचार – पशु का चारा 48 घण्टे के लिए बिल्कुल बन्द कर देना चाहिए। इसके बाद पशु को जुलाब देना चाहिए। पेट (रूमेन) की मालिश करनी चाहिए। इसके बाद सामान्य टॉनिक देना चाहिए। अगर चिकित्सा से रोग ठीक न हो तो पशु शल्य चिकित्सक द्वारा ऑपरेशन कर रूमेन को चीरकर चारे को बाहर निकलवाना पड़ता है।

अजीर्ण रोग – यह रोग पशुओं को अधिक समय तक रूखा–सूखा, गला–सड़ा, बदबूदार चारा मिलने से होता है। पाचन प्रणाली ठीक कार्य नहीं करती है। पेट में उत्पन्न हुए परजीवी भी अपच उत्पन्न करते हैं। पशु की भूख और जुगाली बिल्कुल अनियमित हो जाती है। चमड़ी सूख जाती है। पशु खाना पूरी तरह पचा नहीं पाता है। पानी ज्यादा पीता है। पशु सुस्त सा रहता है। मल सूखा और बकरी की मैंगनी के समान थोडा–थोड़ा होता है। पशु की कोख खाली मालूम होती है।

उपचार – पशु को जुगाली की दवा देकर दस्त करवाने चाहिए। 2 तौला सौंठ कूट–पीस कर एक पौंड सरसों के तेल में मिलाकर पशु को पिला देनी चाहिए अथवा सरसों या तिल का तेल–1 पौंड तारपीन का तेल–1 औंस मिलाकर पिला देना चाहिए। इससे आफरे के साथ पेट के कीड़े भी मर जाते हैं।

रोगी पशु को भोजन– पशु को चारा थोड़ी–थोड़ी मात्रा में कई बार खिलाना चाहिए। प्रथम दिनों में मुलायम घास, दलिया और चावल का मांड देना चाहिए। इसके बाद थोड़ा–थोड़ा दाना बढ़ाते जाना चाहिए। पशु को कब्ज उत्पन्न करने वाला चारा एवं दाना नहीं देना चाहिए।

डॉ. मीनाक्षी सरीन एंव अनिल मूलचंदानी (मो. 9214040208)

सफलता की कहानी

डेयरी फार्मिंग से कामयाब हुए सुरेश पूनियां

पक्के इरादों के साथ लक्ष्य की ओर बढ़ा जाए तो आज नहीं तो कल, कामयाबी खुद–ब–खुद कदम चूमती है। नोहर फेफाना के युवा पशुपालक सुरेश पूनियां ने इस उक्ति को चरितार्थ किया है। बारहवीं कक्षा तक पढ़ाई के बाद नौकरी के बजाए जब खुद की खेती संभाली तो साथ में डेयरी व्यवसाय को भी चुना। उनकी इस प्रयोग धर्मिता को शुरूआत में किसी ने नहीं सराहा लेकिन अपनी समझ और मेहनत के दम पर आज डेयरी व्यवसाय में वो मुकाम हासिल किया है, जिसे देखकर क्षेत्र के अन्य पशुपालक प्रेरणा ले रहे हैं। कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर के विशेषज्ञों की टीम ने उनके फार्म का निरीक्षण किया और पाया कि उनकी डेयरी फार्म के हर एक इकाई का प्रबंधन वाकई उच्च स्तर का है। 80′ गुना 50′(फीट) का शेड आधुनिक तकनीक से बना है। पशुओं को गर्मी के प्रकोप से बचाने के लिए उन्होंने विशेष ट्रिपिंग तकनीकी को अपनाया है जिसकी लागत करीब चौदह हजार रूपये है जो गर्मी से होने वाले भारी नुकसान को देखते हुए बहुत ही फायदेमंद है। उनके फार्म पर छोटे–बड़े कुल 70 होल्सटीन गायों का समूह है जिनमें करीब 35 दुधारू हैं। पशुओं के रख–रखाव, पोषण, टीकाकरण और यहां तक की कृत्रिम गर्भाधान तक का काम सुरेश खुद बखूबी संभालते हैं और साथ ही जरूरी रिकार्ड भी रखते हैं। कुल 12 बीघा जमीन में से 3 बीघा में चारा फसल उगाते हैं जिनसे हरे–चारे की आपूर्ति हो जाती है। साथ ही वे साइलेज भी तैयार करते हैं जिसमें सूखी व हरे चारे के साथ न्यूट्रीफीड काम में लेते हैं। दूध दुहने के लिए मशीन काम में लेते हैं। कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर के टीचिंग एसोसियेट डॉ. नवीन सैनी ने बताया कि ये कुशल प्रबंधन का ही नतीजा है कि उनके फार्म पर पशुओं में प्रजनन दर भी बहुत अच्छी है एवं ब्यात के बाद 45–60 दिन में पशु ताव में आ जाता है और कृत्रिम गर्भाधान से 70 प्रतिशत सफल परिणाम मिल रहे हैं। उत्पादन की दृष्टि से देखें तो प्रतिदिन 4–5 क्विंटल दूध का उत्पादन ले रहे हैं। जिसकी 3.6 प्रतिशत वसा एवं 8.3 प्रतिशत एस.एन.एफ (वसा के अतिरिक्त ठोस) के आधार पर सरस एवं नेस्ले में विपणन कर अच्छी आमदनी ले रहे हैं। पूनिया को नौकरी नहीं कर पाने का अफसोस नहीं है और वे अपने इस व्यवसाय को उंचाई पर ले जाने को अग्रसर हैं। उन्होनें खुद कामयाबी हासिल कर क्षेत्र के पशुपालकों के लिए रोल मॉडल तैयार किया है जिसे देखकर लोग डेयरी व्यवसाय के लिए प्रेरित हो रहे हैं।

– सुरेश पूनियां (मो. 09829039902)

आधुनिक मेंजर

मिल्किंग मशीन

ग्रामीण क्षेत्रों में नवजात बछ्ड़े व बछड़ियों की मृत्युदर कम करने के उपाय

पशुपालन हमारी अर्थव्यवस्था और कृषि का अभिन्न अंग है। पशुपालन का कृषि क्षेत्र में 26.90 प्रतिशत (2007–08) व सकल घरेलू उत्पाद में 5.5 प्रतिशत योगदान है। 2007 की पशु गणना के अनुसार हमारे देश में 199. 08 मिलियन गाय एवं 105.3 मिलियन भैंस हैं। ग्रामीण क्षेत्र में पशुपालन कृषि के साथ–साथ मुख्य व्यवसाय है। हमारे देश में नवजात बछड़े एव बछड़ियों की मृत्युदर 30–35 प्रतिशत है, जिससे पशुपालक भाइयों को बहुत आर्थिक नुकसान होता है। भारत में 5–6 माह के भैंस के बछड़ें को मांस के लिए उपयोग में ले लिया जाता है जिससे पशुपालकों को एक बछड़े से 6–9 हजार रूपये का फायदा होता है एवं एक गाय और भैंस की बछड़ी 2–3 साल बाद कम से कम 40,000–50,000 रू का आर्थिक फायदा करती है। भारत में बछड़ें एव बछड़ियों की मृत्यु के प्रमुख कारणः–

1. शुष्ककाल में सही तरीके से ग्याभिन जानवरों का रख–रखाव– शुष्ककाल के दौरान ग्याभिन गाय एव भैंस को पर्याप्त मात्रा में दाना खिलाना चाहिए, क्योंकि बच्चे की सबसे अधिक वृद्धि आखिरी तीन माह में होती है। इस दौरान बच्चे एवं माँ दोनों के लिए पोषक तत्व बहुत जरूरी होते हैं, इसलिए गाय एव भैंसों को इस दौरान कम से कम 2 किग्रा. दाना प्रतिदिन देना चाहिए। गाय व भैंस के ब्याने से 1 माह पूर्व कृमिनाशक दवा अंतःजीवियों से बचने हेतु पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार पिलानी चाहिए। ब्याने के 15–30 दिन पूर्व ग्याभिन जानवर को अलग रखना चाहिए

2. ग्याभिन जानवर का प्रसव के समय रखरखावः– मुख्यतः ग्याभिन जानवर रात के समय ब्याते हैं, कभी–कभी नवजात बच्चे को आवारा कुत्ते ले जाते हैं। सर्दी एवं वर्षा के समय ग्याभिन जानवर का फर्श सूखा होना चाहिए क्योंकि इस समय नवजात बच्चे को गीला फर्श होने की वजह से ठण्ड लग जाती है एवं श्वसन बीमारी हो जाती है, जिससे बच्चे की मृत्यु हो सकती है। ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों की मृत्यु सबसे अधिक श्वसन बीमारी के कारण होती है, इसलिए ग्याभिन जानवर के नीचे 5–6 इंच की भूसा या घास का बिछावन रखना चाहिए। बच्चे के जन्म के तुरन्त बाद बच्चे को माँ से अलग करके सर्वप्रथम उल्टा करना चाहिए जिससे उसके नाक से म्यूकस निकल सके एवं पर्याप्त श्वसन क्रिया चल सकें। बाद में उसके शरीर को तौलिये या किसी अन्य साफ कपड़े से अच्छी तरह पौंछ कर गर्म पानी से जिसमें नीम की पत्ती या एन्टीसेप्टिक सॉल्यूशन (डिटॉल) मिला हो बछड़े को नहलाना चाहिए। नहलाने के बाद सूखे कपड़े से पौंछना चाहिए। इसके पश्चात् नाभि को 2–3 से.मी. शरीर से दूर धागे से बांध कर, नाभि को साफ व जीवाणुरहित कैंची या ब्लेड से काट देना चाहिए एवं तुरन्त उस जगह टिंचर आयोडीन सॉल्यूशन या डिटॉल लगाना चाहिए।

3. नवजात बच्चों का जन्म के बाद रख–रखावः–नवजात बच्चों को जन्म के बाद खीस एवं दूध पिलाना :– गांवों में हमारे किसान भाई ज्यादातर नवजात के जन्म पश्चात् खीस को जैर डाल देने के बाद पिलाते हैं एवं कभी–कभी पशु जैर देरी से डालते हैं, जिससे खीस पिलाने में देरी हो जाती है। बच्चों को खीस जन्म के बाद आधे घण्टे के अन्दर पिलाना चाहिए क्योंकि प्रथम खीस में बीमारी के विरूद्ध लड़ने की क्षमता भी अधिक होती है जो बाद में धीरे–धीरे घटती जाती है। बच्चों में जन्म के बाद प्रतिरोधक क्षमता उसमें उपस्थित एन्टीबॉडीज से प्राप्त होती हैं।

शेष पेज7 पर...

विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर शोध कार्य

पशु शरीर में जल की भूमिका

पशु शरीर में जल की बहुत आवश्यकता होती है। पशु को समय पर पीने का पानी देना आवश्यक होता है। यदि पशु को समय पर पानी नहीं मिले और देर तक प्यासा रहे तो उसके शरीर की विभिन्न क्रियाओं पर असर हो सकता है। इस असर की गंभीरता प्यासा रहने की अवधि पर निर्भर करती हैं। कई बार लम्बे समय तक प्यासा रहने पर पशु के शरीर की सामान्य क्रियाएं प्रभावित हो जाती है जिससे पशु का उत्पादन गिरता है साथ ही स्वास्थ्य भी खराब होने का खतरा रहता है। इस तरह का एक शोध कार्य मारवाड़ी नस्ल की भेड़ों पर किया गया। यह देखा गया कि प्यास अवधि में पशु के शरीर के तापमान में वृद्धि हो गयी तथा नाड़ी भी तेज चलने लगी। प्यास के कारण पशु के शरीर के भार में कमी आई, प्यासा रहने की स्थिति में पशु के खाने की मात्रा में भी गिरावट देखी गई। प्यास की अवधि के दौरान पशु के शारीरिक जल को मापा गया और उसमें कमी पाई गयी। पानी की कमी का शरीर पर प्रभाव देखने के लिए रक्त के नमूनों का भी परीक्षण किया गया तथा उनमें सामान्य की अपेक्षा बदलाव देखा गया। पशु को जब पानी पिलाया गया तो धीरे–धीरे सामान्य स्थिति आने लगी। रक्त के नमूनों के नतीजों से यह निष्कर्ष निकला की पशु की आंतरिक स्थिति को सामान्य होने में थोड़ा समय लगता है। इस शोध के नतीजे यह बताते हैं कि पशुपालकों को पशुओं के पानी पीने पर विशेष ध्यान रखना चाहिए ताकि पशु स्वस्थ रहे और उत्पादन भी नहीं गिरे।

शोधकर्ता– डॉ. बी.एस.सैनी (मो.9829276218), मुख्य समादेष्टा–प्रो. नलिनी कटारिया

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान-अक्टूबर, 2014

पशु रोग	पशु प्रकार	क्षेत्र
मुँह खुरपका रोग (Foot & Mouth Disease)	गाय, भैंस, बकरी, भेड़	बाँसवाड़ा, भरतपुर, दौसा, श्री गंगानगर, जयपुर, झुँझुनू, अनूपगढ़, धौलपुर, सवाई माधोपुर, अलवर
गलघोंटू (Haemorrhagic septicemia)	भैंस, गाय	अलवर, धौलपुर, जयपुर, सवाई माधोपुर, दौसा टौंक, बून्दी, राजसमन्द, पाली, सीकर,श्रीगंगानगर, उदयपुर
ठप्पा रोग (Black Quarter)	भैंस	अनूपगढ़, जयपुर, बीकानेर
पी.पी.आर. (P.P.R.)	बकरी	सवाई माधोपुर
बोचूलिज्म (Botulism)	गाय	जैसलमेर, जोधपुर, फलौदी
चेचक (Pox)	बकरी	जयपुर, बीकानेर
सर्रा (Trypanosomosis)	ऊंट, भैंस,	अनूपगढ़, बाँसवाड़ा, धौलपुर, हनुमानगढ़, बून्दी
फड़किया रोग (Enterotoxaemia)	बकरी, भेड़	सवाई माधोपुर, बाँसवाड़ा, जयपुर
Pneumonic Pasteurellosis	गाय	बीकानेर
Enzootic Abortion in Ewes (EAE) / Chlamydial Abortion	भेड़	बीकानेर, नागौर
रक्त प्रोटोजोआ (Theileriosis, Babesiosis)	भैंस, गाय	बाँसवाड़ा, बीकानेर, बून्दी, धौलपुर, हनुमानगढ़, अनूपगढ़, सवाई माधोपुर
गोल–कृमि (Round Worms)	भैंस, बकरी, गाय	सीकर, धौलपुर, सवाई माधोपुर
फीता–कृमि (Tape Worms)	भैंस, बकरी, गाय	सीकर, धौलपुर
पर्ण–कृमि (Trematodes)	ऊंट, भैंस, गाय, भेड़, बकरी	डूंगरपुर, कोटा, राजसमन्द, बाँसवाड़ा, सवाई माधोपुर, भरतपुर, बून्दी, धौलपुर, अनूपगढ़, सूरतगढ़, सीकर
खुजली (Mange)	ऊंट	झुँझुनू, जैसलमेर, बाड़मेर

इसके अतिरिक्त मुर्गियों में गमबोरो रोग, दीर्घ श्वसन रोग, कोक्सीडिओसिस (खूनी दस्त), गोल एवं फीता–कृमि, कोराइजा, एविएन ल्यूकॉसिस काम्पलेक्स, कोलिबेसिलोसिस (सफेद दस्त) आदि रोगों की सम्भावना है। मुर्गी पालकों से निवेदन है कि इस संबंध में विस्तृत जानकारी विशेषज्ञों से प्राप्त कर लें।

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करे – डॉ. बी.के. बेनीवाल, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर एवं डॉ. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग एवं डॉ. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास, बीकानेर । फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183

मुख्य समाचार

वैज्ञानिक तरीके से पशुधन का रखरखाव करें – यह हर घर, गांव और प्रदेश की खुशहाली का रास्ता है : प्रो. गहलोत

बीकानेर। वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशुधन चारा संसाधन प्रबंधन एवं तकनीक केन्द्र में 17 सितम्बर को 30 पशुपालकों का एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने कहा कि पशुपालकों को विश्वविद्यालय से जोड़कर नई तकनीक और ज्ञान द्वारा पशुपालन को एक लाभदायक व्यवसाय बनाने के लिए हर संभव उपाय करना ऐसे प्रशिक्षण का उद्देश्य है। कुलपति ने पशुपालकों को आह्वान किया कि वे वैज्ञानिक तरीके से पशुधन का रखरखाव करें क्यों कि यह हर घर, गांव और प्रदेश की खुशहाली का रास्ता है। पशुधन चारा संसाधन प्रबंधन एवं तकनीक केन्द्र के प्रमुख अन्वेषक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि हरे चारे को लम्बे समय तक सुरक्षित रखने की साइलेज तकनीक पर बीकानेर, नागौर और झुन्झुनू जिलों में कृषकों और पशुपालकों के शिविर लगाकर प्रायोगिक प्रदर्शन आयोजित किये गए। केन्द्र द्वारा तैयार ''उन्नत पशुपोषण: अधिक उत्पादन'' के रंगीन फोल्डर का विमोचन किया गया।

वेटरनरी विश्वविद्यालय पशुपालन सप्ताह का समापन नोहर में पशुपालन गोष्ठी

बीकानेर। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा आयोजित पशुपालन सप्ताह के अंत में 1 सितम्बर को नोहर में पशुपालन गोष्ठी में पशुचिकित्सा वैज्ञानिकों और पशुपालको में सीधे संवाद का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि वेटरनरी विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक प्रो. राकेश राव और अध्यक्षता प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो.सी.के. मुरड़िया ने की। प्रो. मुरड़िया ने कहा की कृषि विज्ञान केन्द्र नोहर द्वारा 25 अगस्त से एक सप्ताह तक गांवो में पशुपालन गोष्ठियां, चिकित्सा शिविर और गौशाला कल्याण कार्यक्रम आयोजित कर पशुपालको को प्रशिक्षित किया। उन्होंने कहा कि एक सफल पशुपालक बनने के लिए समय पर गर्भाधान, टीकाकरण और उचित पोषण और आहार जरूरी है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक प्रो. राकेश राव ने कहा कि विश्वविद्यालय अपने पशुधन अनुसंधान केन्द्रों के माध्यम से देशी गौवंश की नस्लों के संवर्द्धन और दूध उत्पादन बढ़ाने के काम में लगा हुआ है। नोहर पशु अनुसंधान केन्द्र के प्रभारी प्रो. राजीव जोशी ने बताया कि राठी गाय से एक दिन में 25 ली. तक दूध प्राप्त किया गया है। वरिष्ठ पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ. दलीप सिंह, कृषि विभाग के सहायक निदेशक डॉ. बलवीर सिंह और सामाजिक कार्यकर्ता किसान लादूराम जैवरिया ने भी विचार व्यक्त किये। कृषि विज्ञान केन्द्र के टीचिंग एसोसिएट डॉ. नवीन सैनी ने बताया कि सप्ताह में प्रतिदिन विशेषज्ञों और स्वंय सेवकों ने 22 गांवों में जा कर पशुपालन की उन्नत तकनीक और रखरखाव की जानकारी दी।

भैंस उन्नयन नेटवर्क परियोजना की 12वीं राष्ट्रीय संगोष्ठी

बीकानेर। वेटरनरी विश्वविद्यालय के तत्वावधान में भैंस उन्नयन नेटवर्क परियोजना की 12 वीं राष्ट्रीय संगोष्ठी विश्वविद्यालय के संघटक पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानिंया, वल्लभनगर, उदयपुर में सम्पन्न हुई। संगोष्ठी में भैंस परियोजनाओं के 30 वैज्ञानिकों ने भाग लेकर अनुसंधान कार्यों का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उपमहानिदेशक (पशु विज्ञान) एवं मुख्य अतिथि प्रो. के.एम.एल. पाठक ने सूरती भैंस परियोजना, वल्लभनगर के लिए वार्षिक बजट में 30 प्रतिशत वृद्धि की घोषणा की। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने सभी वैज्ञानिकों का धन्यवाद करते हुए संगोष्ठी को अत्यन्त उपयोगी बताया। विधायक एवं विशिष्ट अतिथि रणधीर सिंह भीण्डर ने महाविद्यालय द्वारा किये जा रहे कार्यों की सराहना की। मुख्य समन्वयक उन्नयन परियोजना डॉ. अश्विन कुमार पांडेय ने बताया कि भारत की सात प्रमुख भैंसों की नस्ल उन्नयन परियोजनाएं देश के 16 केन्द्रों पर चल रही है।

मृत्यु दर....शेष पेज 5 का

बच्चों को पहले दिन जन्म के तुरन्त बाद 8–12 घण्टे के अन्तराल में खीस पिलाना चाहिए। उसके बाद अगले 4 दिन तक शरीर के वजन का 10वां भाग खीस पिलाना चाहिए और जो खीस बच जाए उसे फ्रिज में सुरक्षित रखना चाहिए। उसे उन बच्चों को पिलाना चाहिए जिनकी मां खीस न देती हो या जिनकी मां मर जाती है। खीस पिलाने से बच्चों का पहला गोबर निकलने में आसानी होती है। बछड़े की आंत साफ हो जाती है एवं जहरीले पदार्थ कम उत्पन्न होते हैं। खीस में प्रोटीन, विटामिन ए, डी, ई एवं केल्सियम, मेग्नीशियम, आयरन फॉस्फोरस आदि अधिक मात्रा में उपस्थित होते हैं जो उसकी वृद्धि के लिए अति आवश्यक होते हैं। बछड़े को दो माह तक केवल दूध पिलाना चाहिए। इसके बाद बछड़े को थोड़ा–थोड़ा हरा चारा खिलाना शुरू करना चाहिए। तीन माह बाद आवश्यकतानुसार चारा खिलाना चाहिए।

कृमिनाशक का उपयोग: बछड़े/बछड़ियों की मृत्यु का दूसरा सबसे बडा कारण अन्तः परजीवी जैसे गोलकृमि, फीताकृमि आदि का प्रकोप है। बच्चों को यह गंदे पानी, दूषित चारा व मिट्टी खाने से होता है। जिससे बछड़ा सुस्त, शरीर भार में गिरावट, आंखों में चिपचिपा आना एवं दस्त लग जाते हैं, जिससे बछड़े की मृत्यु तक हो जाती है, इसलिए बछड़े/बछड़ियों को 7 दिन की उम्र से प्रत्येक 20 दिन में कृमिनाशक दवा से पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार देनी चाहिए।

सर्दियों में बछड़े/बछड़ियों का रखरखाव: ग्रामीण क्षेत्रों में बछड़े/बछड़ियों की मृत्यु मुख्यत: सर्दियों में निमोनिया के कारण होती है। फर्श गीला रहता है जिससे रोगकारक जीवाणुओं की सख्या बढ़ती है, एवं श्वसन सम्बन्धित बीमारियां होने की सम्भावना अधिक हो जाती है। इससे बचने के लिए बछड़े/बछड़ियों को सूखी जगह रखना चाहिए एवं सर्दियों में रोज या एक दिन बाद घास /भुसे के बिछावन को बदल देना चाहिए एवं दिन के समय पर्याप्त धूप मिलनी चाहिए। बछड़े/बछड़ियों को सीधी ठंडी हवा से बचाना चाहिए।

टीकाकरण: बछड़ों/बछड़ियों में टीकारण बहुत जरूरी है यह मृत्यु दर कम करने में अहम भूमिका निभाता है। टीकाकरण से बछड़े/बछड़ियों की रोग–प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है, इसलिए पशु चिकित्सक की सलाह के अनुसार खुरपका मुंहपका, लंगडा बुखार, गलघोंटू, थिलेरियोसिस आदि का समय पर टीकाकरण करवा लेना चाहिए।

अन्य प्रबन्धन: बछड़े/बछड़ियों को थोड़ा–थोड़ा हरा चारा खिलाना शुरू करना चाहिए व कभी भी ज्यादा हरा चारा व चारे में अचानक परिवर्तन नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे बच्चों में आफरा आ जाता है ज्यादा आफरे से भी बच्चों की मृत्यु हो जाती है।

बछड़े/बछड़ियों को बाहृय परजीवियों से बचाना चाहिए क्योंकि ये परजीवी जैसे जू, चिंचड़े आदि खून चूसते हैं। जिससे खून की कमी एव, बालों का झड़ना, खुजली व प्रोटोजोआ जैसे थाईलेरियोसिस आदि बीमारियाँ हो जाती हैं। इसके लिए बच्चों के शरीर पर कीटनाशक का उपयोग पशु चिकित्सक की सलाह से करना चाहिए। बछड़ों के रहने व पानी पीने के स्थान की दीवारों की पुताई करनी चाहिए।

बछड़ियां एवं बछड़े भविष्य के दुधारू पशु या बैल होते हैं। अतः उचित देखभाल एवं प्रबन्धन से पशुपालकों को होने वाले भारी नुकसान से बचाया जा सकता है, इस प्रकार अधिक से अधिक बछड़े एवं बछड़ियों के उत्पादन से अच्छी नस्ल की गायों व भैंसों की संख्या भी बढायी जा सकती है।

—डॉ. नवावसिंह, डॉ. योगेश्वर प्रसाद, दिनेश कुमार दहिया, डॉ. अमित शर्मा, स्नातकोत्तर पशु चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर

निदेशक की कलम से...

मेले में पशु का प्रदर्शन कैसे करें

प्यारे पशुपालक भाइयों और बहनों, राम राम सा ! आइए, मैं आपके साथ बहुत ही उपयोगी जानकारी बांटना चाहता हूं। क्रय–विक्रय हेतु नस्ल विशेष के पशुओं को किस प्रकार की तैयारी के साथ प्रदर्शित किया जाना चाहिए इस पर चर्चा करते हैं। सदियों से लगने वाले पशुओं के मेलों आदि में पशुओं की खरीद–फरोख्त करते हैं। दुधारू पशुओं को प्रदर्शन या मेले हेतु तैयार करने के लिए 4–6 सप्ताह पूर्व उनका चुनाव करके अलग कर लिया जाता है। चुनाव करते समय उनके नस्लीय गुणों की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। प्रदर्शन की तैयारी के लिए एक अच्छे पशु के साथ–साथ हाल्टर, रस्सी, ब्रश, साबुन, कैची, बाल्टी, नारियल तेल, सैंड पेपर या रेती, बोरे के टुकड़े, खुर काटने की सामग्री, छोटा तौलिया या साफ कपड़ा, गर्म व ठंड़े पानी की आवश्यकता होती है। चयनित पशु को 250 ग्राम मूँगफली की खलीयुक्त एक कि.ग्रा. अतिरिक्त आहार/हरा चारा आदि खिलाना प्रारंभ कर देना चाहिए। इससे पशु का शारीरिक सौष्ठव उभर आता है तथा त्वचा चमकदार व नर्म हो जाती है। प्रतिदिन ग्रूमिंग और साबुन से स्नान कराया जाना चाहिए। पशु की चमड़ी पर लगे हुए कीचड़ आदि निकाल देने चाहिए। बाड़े में घास का बिस्तर होना चाहिए ताकि उठते – बैठते त्वचा गंदी न हो। बढ़े हुए खुर और अनावश्यक बाल काट दिए जाने चाहिए। सींग रेती से रगड़कर उस पर नारियल तेल लगा देना चाहिए। इस अवधि के दौरान पशु को हाल्टर लगाकर चलाने, घुमाने तथा आवाज के आधार पर स्थान बदलने की ट्रेनिंग देनी चाहिए। दुधारू गाय – भैंस को प्रदर्शन से कई घंटे पहले दुह लेना चाहिए ताकि प्रदर्शन के समय उसके थन भरे हुए दिखाई दें। पशु को 6–8 घंटे से पानी न देकर प्रदर्शन पूर्व ही पानी पिलाकर ले जाते हैं। माइक पर आवाज दिए जाने पर पशु को हाल्टर व रस्सी से पकड़कर आकर्षक तरीके से चलाते हुये प्रदर्शन स्थल की ओर ले जाना चाहिए और प्रयास करना चाहिए कि निरीक्षण के दौरान पशु की समस्त अच्छाईयों की ओर निर्णायकों का ध्यान आकर्षित किया जा सके।

सावधानियां : दुधारू पशुओं को प्रदर्शन में ले जाने के लिए विशेष व्यवस्था की जानी चाहिए। प्रदर्शनी में भाग लेने वाले पशुओं को कम से कम 24 घंटे पहले नीयत स्थान पर पहुँचा देना चाहिए ताकि नए स्थान में पशु आराम करते हुए नए माहौल के अनुरूप ढल सकें। लंबी दूरी के लिए (200–300 कि.मी.) ट्रक या ट्रेन से जाना चाहिए। पशुओं को चढ़ाते–उतारते समय उन्हें चोट लगने से बचाना चाहिए। यात्रा के दौरान पशुओं को समय पर भोजन, पानी दिया जाना चाहिए तथा दूध भी समय से निकालते रहना चाहिए। लंबी यात्रा हो तो बीच में पशुओं को उतारकर मैदान में घुमा–फिरा लेना चाहिए। प्राथमिक चिकित्सा किट में आवश्यक औषधियों को सहेजकर रख लेना चाहिए। पशुओं को चढ़ाने के पहले ट्रक या वैगन की सफाई करके चूना डाल देना चाहिए तथा उसके ऊपर कम से कम आधा फुट ऊँची सूखी घास का बिस्तर बिछा देना चाहिए।

प्रो. (डॉ.) चन्द्रेश कुमार मुरड़िया, प्रसार शिक्षा निदेशक

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित धीणे री बात्यां के अन्तर्गत अक्टूबर, 2014 में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है।

क्र.सं.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	प्रो. कर्नल (डॉ.) ए. के. गहलोत कुलपति, राजुवास, (09414138211)	राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न संस्थाओं के साथ राजुवास का समन्वयन एवं गौशालाओं के साथ जुड़कर गौवंश की नस्लों का संवर्द्धन	02.10.2014 सांयः 5.30 बजे
2	डॉ. प्रवीण विश्नोई (09414594944) सीवीएएस, बीकानेर	अश्वों (घोड़ों) के शल्य रोग एवं उनका उपचार	09.10.2014 सांयः 5.30 बजे
3	प्रो. त्रिभुवन शर्मा (09414264997) पशु शल्य चिकित्सा विभाग	पशुओं की उत्पादकता पर पोषण का प्रभाव	16.10.2014 सांयः 5.30 बजे
4	डॉ. सुनीता पारीक सीवीएएस, वल्लभनगर, (09461245845)	पशुपालन में पशुपालकों की कुछ भ्रान्तियां एवं उनका निवारण	23.10.2014 सांयः 5.30 बजे
5	प्रो. संजीता शर्मा पीजीआईवीआर, ,जयपुर (09649551451)	डेयरी व्यवसाय में पशुओं का प्रबंधन	30.10.2014 सांयः 5.30 बजे

पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि निर्धारित समय पर प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठायें।

मुस्कान !

संपादक
प्रो. सी. के. मुरड़िया
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क)
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पशु पालन नए आयाम
मासिक अंक : अक्टूबर, 2014

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

....

....

....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजूवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक डॉ. सी. के. मुरडिया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन विजय भवन पैलेस राजूवास बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : सी. के. मुरडिया